International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 8; August 2016; Page No. 305-307

निर्मल वर्मा की कहानियाँः अकेलेपन और ऊब का बीहड

डॉ0 सरिता चौहान

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी–विभाग, एमसीएम डीएवी महिला कॉलेज, सेक्टर–36, चण्डीगढ

भूमिका

निर्मल वर्मा की गणना हिन्दी के उन लेखकों में की जाती है जिनकी रचनाओं ने हिन्दी साहित्य के रिक्थ को समृद्ध किया है। वे उन नये कहानीकारों में हैं जिनके लिए बदलते मानव सम्बन्धों को उद्घाटित करना और मानव मन के अंधेरे कोनों को प्रकाशित करना ही मात्र महत्त्वपूर्ण नहीं है अपितु तनाव, अकेलेपन, अलगाव, असुरक्षा, मृत्युबोध जैसी स्थितियों के फलस्वरूप उपजे सन्नाटे को भेदना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक है। निर्मल वर्मा स्मृति एवं अकेलेपन के बीहड़ में अपने पाठक को बेहिचक ले जाते हैं। इनकी कहानियों के अध्ययन के पश्चात् हम पाते हैं कि यहाँ चुप की अनेक तहें हैं किन्तु यह भी सत्य है कि इस मौन को अभिव्यक्त करने की कला निर्मल बखूबी जानते हैं। इनकी कहानियों का विश्लेषण करने के पश्चात् ऐसा लगता है मानों ''वे ज़िन्दगी के अधफटे झोले में यादों का सरमाया भरकर, किसी तलाश में भटकते नज़र आते हैं। कहीं न कहीं यह तलाश रचना के सच की तलाश भी है। वे जानते हैं कि अंततः प्रत्येक मनुष्य अकेला है। अकेला है और किसी प्रतीक्षा में है। उनके पात्र उजाड़ में बिछे बैंच पर बैठे किसी नामालूम शख्सियत की प्रतीक्षा करते नज़र आते हैं।'' [1]

साहित्य को अकेलेपन के क्षणों में स्वयं से साक्षात्कार मानने वाले एवं कहानी को ''उपन्यास और कविता के बीच की साहित्यिक विधा स्वीकार करने वाले'' [2] निर्मल वर्मा नयी कहानी के सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनकी कहानियाँ प्रायः ''मन के कोने में छिपे उस चुप आर्त्तनाद को ढोने और लिखने की कोशिश करती हैं जिसे हम अपने घनघोर अकेलेपन में अपनी शिराओं में बजता हुआ महसूस करते है।'' [3] निर्मल वर्मा के लिए कहानी ''अंधेरे में एक चीख है।'' [4] एक विशेष स्तर के पाठकों की अपेक्षा करती इनकी कहानियां सम्भ्रान्त मध्मयवर्गीय मानसिकता का प्रतिनिधित्व करती हैं। निर्मल वर्मा की कहानियों में एक ख़ास क़िस्म की 'इण्डिविजुएलिटी' है। इन कहानियों में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के माध्यम से नितान्त 'ऐन्द्रिक भाषा' के सहारे पात्रों के अन्तर्मन में बैठा पाया जाता है। राणा नायर के अनुसार ''निर्मल वर्मा की साहित्यिक कलादृष्टि एक ऐसी पौध है जिसका बीज भारतीय धरती में नहीं बल्कि यूरोप में पड़ा है।'' [5] इनके प्रवासी पात्र अपने घर, नगर, देश से अलग होने के बाद अजनबीयत तथा अकेलेपन के अभिशाप को भोगने के लिए अभिशप्त हैं। इनके पात्र जिन्दगी से ऊबे हुए हैं और इस ऊब से कहीं भी मुक्ति नहीं है। निस्संदेह नये कहानीकारों में निर्मल वर्मा ऐसे कहानीकार हैं जिन्हे नितान्त वैयक्तिक चेतना का कहानीकार कहा जा सकता है। यही वैयक्तिक चेतना इनके पात्रों को अन्तर्मुखी बनाती है।

निर्मल वर्मा की कहानियों में एक 'बेआवाज़ शोर' है जो जीवन के अनचीन्हे डर की आहट से उत्पन्न होता है इनकी कहानियाँ आज के परिवेश के अलगाव, अजनबीयत, संशय, अविश्वास, संत्रास, कुन्ठा और जीवन में गहराते सूनेपन को व्यंजित करती हैं। ''निर्मल वर्मा के लेखन में मृत्युबोध की गहन छाया है। ऐसा लगता है मानो उनके लिए जीवन का कोई विकल्प नहीं तथा मृत्यु ही केवल सम्पूर्ण सत्य है, किन्तु निर्मल की सिद्धहस्त लेखनी मृत्यु के इसी इन्तजार को ऐसी कलात्मकता में ढाल देती है जहां केवल उसी का होना विकल्प बन जाए'' [6] मृत्यु और जीवन का अनिवार्य एवं आत्मीय सम्बन्ध उनकी रचनाओं में एक गम्भीर अन्तर्दृष्टि को जन्म देता है।

घोर निराशा, अकेलापन तथा अन्य ऊबा देनेवाली स्थितियाँ जिनसे जीवन निस्सार सा लगने लगता है, वह यथार्थ–बोध निर्मल की कहानियों में सर्वत्र मिलता है। उनकी कहानियों का पात्र नितांत अकेला है। वह जो अनुभूत करता है, भोगता है उसे ज्यों का त्यों सत्यनिष्ठा और ईमानदारी से व्यक्त भी करता है। इनकी कहानियाँ एक विशेष प्रकार की रूमानी भूमि पर घटित होती हैं। यह भूमि विदेशी है। शराब, सिगरेट, पब, रेस्तरां इनके पात्रों को उन्मत्त बनाने एवं विपरीत परीस्थितियों से पलायन कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। कारण चाहे जो भी रहे हों, इनके पात्र अपने को समाज में 'मिसफिट' पाते हैं। इनकी कहानियाँ उन 'अंधेरे कोनो' का साक्षात्कार भी कराती हैं जिन्हें हम छिपाकर रखना चाहते हैं। ''यह अनायास नहीं है कि निर्मल वर्मा की कहानियों के पात्र अपने अकेलेपन का चुनाव खुद करते हैं, जैसे जिन्दगी में अकेला होना उनकी अनिवार्य जरूरत बन गई है। वास्तव में यह पात्रों के माध्यम से लेखकीय मानसिकता का भी चुनाव है।'' [7] इनकी कहानियों के पात्रों के लिए कोई जगह नहीं जहाँ लौटा जा सके। परिन्दे की लतिका से लड़कियाँ पूछती हैं – मेडम छुट्टियों में क्या आप घर नहीं जा रही? लतिका उन्हें बताती है कि अभी कुछ पक्का नहीं है। वह कहती है– आई लव द स्नो फॉल। तभी लतिका को अहसास होता है कि यही बात उसने पिछले साल भी कही थी और शायद पिछले से पिछले साल भी। 'लंदन की एक रात' कहानी में 'विली' 'जार्ज' से पूछता है–''क्या वापिस घर जाओगे?'' इस पर जार्ज के स्वर में एक सूना सा खोखलापन उभर आता है, मानो घर शब्द बहुत विचित्र हो। 'डेढ़ इंच ऊपर' कहानी का प्रमुख पात्र पिछले पन्द्रह वर्षों से रोज आधी रात के वक्त 'घर को छोड़कर शराबखाने में पहुँच जाता है। 'दो घर' 'वीक एंड' 'छुट्टियों के बाद' आदि कहानियों में घर की अनुपस्थिति मनुष्य के खालीपन एवं अकेलेपन को सशक्तता से उजागर करती है।

निर्मल वर्मा की कहानियों की खास विशेषता है– पहाड़, कुहरे, ठंड, वर्षा, झील, ऊँचाई, प्राकृतिक सुषमा आदि का बहुतायत में वर्णन। पहाड़ों ने इनकी कहानियों में खास जगह बना ली है। ''यहाँ प्रत्येक पात्र की पीड़ा अकेली है, उसमें किसी दूसरे का साझा नहीं। उसकी अपनी अलग धूप है, धूप के टुकड़े हैं। बादलों के टुकड़े हवा में बिखरते हैं। आसमान सबके लिए अलग–अलग खुलता है।''[8] निर्मल वर्मा का कहना है– ''पहाड़ी मकानों की एक खास निर्जन क़िस्म की भुतैली आभा होती है। इसे शायद वही समझ सकते हैं जिन्होंने अपने अकेले सांय– सांय करते बचपन के वर्ष, बहुत से वर्ष, एक साथ पहाड़ी स्टेशनों पर गुजारे हैं।'' [9] निर्मल वर्मा के पात्रों के अलग किस्म के प्रेम–सम्बनधों को उभारने में इस प्रकार का परिवेश सहायक बन पड़ा है।

इनकी कहानियों में अस्तित्ववाद का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। इनके पात्रों में अपने अस्तित्व के प्रति विशेष प्रकार का मोह तथा वैयक्तिक सजगता है। हालांकि अकेलेपन से ऊब कर इनके पात्र क्लबों, रेस्तरां और पबों में भटकते हैं किन्तु यह भटकाव उन्हें किसी प्रकार की संतुष्टि नहीं देता। परिणामतः ये पात्र स्वयं से ही संघर्ष करते रहते हैं और अपने ही अन्तस् की गुत्थियों को उलझाते–सुलझाते रहते हैं। इनकी कहानियाँ यथार्थ के सूक्ष्म स्तरों का उद्घाटन करती हैं। अतः प्रतीकात्मक शैली लगभग अनिवार्य हो गई है। वास्तव में यह सांकेतिकता इनकी कहानियों को गूढ़ रूप प्रदान करती है।

निर्मल वर्मा की अनेक कहानियों में रूग्ण पात्र मिलते हैं, जो अशक्तता और दयनीयता की मूर्ति बन हमारी संवेदनाओं को जगाने के साथ–साथ कथा विकास में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परिन्दे कहानी का डा 'ह्रूबर्ट' फेफड़े की बीमारी से, 'डायरी का खेल' की बिट्टो तपेदिक से, 'अंधेरे में' का बच्चा बुखार से 'दो घर' का बंगाली जानलेवा बीमारी से ग्रसित है। ''वास्तव में यह निर्मल वर्मा की लेखकीय नीति का हिस्सा है। रोग का उपयोग इनकी कहानियों में 'टेक–ऑफ' के लिए हुआ है। उनकी रचनाओं में अपने एकान्त में डूबे पात्रों की बीमारी के दिन उन्हें अपने अवसाद को समझने का अवकाश प्रदान करते हैं और बीमार देह के रास्ते से ही वे अपनी आत्मा के या अपने अलगाव के लैण्डस्केप के करीब पहुँचते हैं।'' [10]

''निर्मल वर्मा की कहानियों में स्मृतियों का एक तकनीक की तरह प्रयोग हुआ है। लगभग हर दूसरी कहानी में कोई पात्र कहीं चला जाता है और वे जो बचे रहते हैं अपने– अपने तरीके से उसका नक्शा उभारने का प्रयत्न करते रहते हैं।'' [11] परिन्दे कहानी में मिस्टर ह्रूबर्ट तथा डा मुकर्जी अतीत को यादों में संजोये हैं और लतिका पर तो स्मृति की छाया सदैव मंडराती रहती है। यह जानते हुए भी कि अतीत मृग तृष्णा है, अप्राप्य है वह उसे पूरी शिद्दत के साथ पाने की इच्छा रखती है। वह बार–बार उस घाव को कुरेदती है जिसका भर जाना ही अच्छा है। निस्संदेह परिन्दे कहानी में अतीत से मुक्त न हो पाने की छटपटाहट और पीड़ा का स्वर अत्यन्त तीव्र है। डा मुकर्जी लतिका से कहते हैं– ''कभी–कभी मैं सोचता हूं मिस लतिका, किसी चीज को न जानना यदि गलत है, तो जानबूझकर न भूल पाना हमेशा जोंक की तरह उससे चिपटे रहना– यह भी गलत है'' [12] लतिका चाहकर भी वर्तमान से रागात्मक सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाती। सदैव स्मृति में खोयी रहने के कारण लतिका समय का बीतना अनुभव नहीं कर पाती– ''इस छोटे से हिल स्टेशन पर रहते हुए उसे ख़ासा अर्सा हो गया, लेकिन कब समय पतझड़ और गर्मियों का घेरा पार कर सर्दी की छुट्टियों की गोद में सिमट जाता है उसे कभी याद नहीं रहता।'' [13] निर्मल की कहानियों में एक खास किस्म का प्रवासीपन तथा असुरक्षाबोध देखने को मिलता है। अपने परिवेश से उखड़ने के बाद मुकर्जी कहते हैं– ''कुछ भी कह लो, अपने देश का सुख कहीं और नहीं मिलता। यहाँ तुम चाहे कितने वर्ष रह लो, अपने को हमेशा अजनबी ही पाओगे।'' [14] अजनबीयत एवं नियति के प्रति अज्ञात भय को झेलते कहानी के पात्र बोझिल एवं विवश जिन्दगी जीने को अभिशप्त हैं। अंधेरा, भूख तनाव, निराशा, उदासी आदि वे चिरपरीचित परिस्थितियाँ हैं जिन पर निर्मल वर्मा ने धड़ल्ले से अपनी लेखनी चलाई है। नियति के प्रति भय को उजागर करती लन्दन की एक रात कहानी की ये पंक्तियाँ देखिये– ''उन सबकी आँखें मुझ पर उठ आई, खामोश और तनी हुई। मुझे लगा, जैसे उस खामोशी में एक अजीब सा भय उभर आया है, मेरे प्रति उतना नहीं जितना उस अज्ञात नियति के प्रति, जिसका निर्णय अगले चन्द लम्हों में होने वाला था।'' [15]

''निर्मल वर्मा के पात्रों के आपसी सम्बन्धों में एक विशिष्ट तनाव फैला दिखाई देता है। कईं बार यह तनाव स्पष्ट होता है तो कईं बार इतना विरल कि उसे ठीक–ठीक तनाव कहना मुश्किल सा लगता है।'' [16] अन्तर, परिन्दे, दो घर जैसी कहानियों में व्याप्त तनाव सम्बन्धों की अनिश्चितता का परिणाम है। लन्दन की एक रात, अंधेरे में, डेढ़ इंच ऊपर आदि कहानियों में एक अजीब तरह की तनाव भरी उदासी और जकड़न भरी बेचारगी है। इनकी कहानियों में जीवन अपनी तमाम विद्रूपताओं, विसंगतियों एंव कटुताओं के साथ उजागर हुआ है। निर्मल की कहानियों में एक अवगुण्ठन है जो 'दिखाई देने' और 'वास्तव में होनें के बीच है। अस्तित्व के लोप का खतरा निर्मल की चिन्ता का विषय है। इनकी कहानियाँ पहचान के छिनने तथा व्यक्तित्व के नकार की विड़म्बना को सशक्तता से व्यंजित करती हैं। इनकी जलती झाड़ी कहानी नये मूल्यों, नयी संवेदनाओं तथा नये प्रश्नों को अभिव्यक्त करती है। यथार्थ की पहचान का संकट इस कहानी का मूल कथ्य है।

निर्मव वर्मा की कहानियों में प्रेम के कईं रूप देखने को मिलते हैं। इनकी खोज, माया दर्पण, लवर्ज, वीक एंड, परिन्दे, डेढ़ इंच ऊपर, अन्तर, दहलीज, अंधेरे में आदि कहानियाँ प्रेम के सर्वथा भिन्न स्वरूपों की ओर इंगित करती हैं। डेढ़ इंच ऊपर कहानी का मुख्य पात्र प्रेम के विषय में कहता है– ''प्रेम करने का अर्थ अपने को खोलना ही नहीं है, बहुत कुछ अपने को छिपाना भी है ताकि दूसरे को हम अपने निजी खतरों से मुक्त रख सकें।'' [17] यहाँ दुख एवं सन्ताप अपनी पत्नी का विश्वास पात्र न बन सकने के कारण हैं जो अकेलेपन की व्यथा को और भी गहरा देता है। निर्मल वर्मा की कहानियों में लगाव तथा संशय साथ–साथ अवस्थित हैं और यही कारण है कि संशय प्रेम या लगाव को अपनी जड़े जमाने नहीं देता। अन्तर कहानी में प्रेम सम्बन्धों में अलगाव का कारण नायक द्वारा नायिका को गर्भपात के लिए बाध्य कर देना है। नायक मातृत्व को भोग–विलास में बाधक समझता है। गर्भपात के बाद नायिका नायक से पूछती है कि अब तो तुम सुखी हो? इस पर नायक जवाब देता है हम दोनों पहले भी सुखी थे। इस पर नायिका तिक्त स्वर में कहती है–''हाँ लेकिन अब तुम सुखी हो।'' अन्तर कहानी तब और अब के सम्बन्धों के अन्तर को सशक्तता से रेखांकित करती है। दहलीज कहानी मनोवैज्ञानिक तरीके से विवाह– पूर्व प्रेम सम्बन्धों के बनने और टूटने का चित्रण करने के साथ–साथ यौवन की दहलीज पर कदम रखती नवयौवना की मनः स्थिति को भी व्यंजित करती है। ''वास्तव में प्रेम अकेलेपन या अधूरेपन के अतिक्रमण का ही एक प्रयास है लेकिन प्रेम करते हुए भी इस अकेलेपन से मुक्त न हो पाना और मुक्ति के लिए छटपटाहट तथा अपने प्रयास की दुखान्त परिणति के बोध की वेदना ही निर्मल वर्मा की कहानियों का केन्द्रीय सरोकार है। यही वह अहसास है जो कहानियाँ पढ़ चुकने के बाद भी देर तक हममें बना रहता है।'' [18] निर्मल वर्मा की कहानियाँ स्त्री–पुरुष के मध्य अविश्वास तथा विवाहेतर प्रणय सम्बन्धों के कारण टूटते–बिखरते स्त्री–पुरुष सम्बंधों को रेखांकित करती हैं। अपनी कुण्ठा, उदासी, उत्तरदायित्वहीनता, अवसाद आदि के कारण इनके पात्र प्रेम को निभा पाने में असमर्थ सिद्ध होते हैं। निर्मल वर्मा की कहानियों के पात्रों के आपसी सम्बन्धों में अस्पष्टता और धुंधलका पसरा रहता है। वास्तव में इन कहानियों का ताना बाना यौन सुलभ आकांक्षाओं तथा तनाव के इर्द गिर्द ही बुना गया है। निर्मल के सभी पात्र विवाह से छुटकारा पाना चाहते हैं। वीकएंड, अन्तर, अंधेरे में, खोज, दहलीज, मायादर्पण, लवर्ज आदि कहानियाँ इस कथन का प्रमाण हैं।

निस्संदेह निर्मल वर्मा अपने पात्रों की वैयक्तिकता एवं वैशिष्टय को उभारने में सजग एवं जागरूक कहानीकार हैं। इनकी कहानियों में व्यक्त विदेशीपन एवं सर्वथा भिन्न क़िस्म की रूमानियत के कारण उन्हें समझने के लिए अतिरिक्त प्रयास की अपेक्षा होती है। लगातार

बढ़ती भौतिक समृद्धि और इसी के अनुपात में बढ़ता तनाव, अकेलापन तथा संवेदनहीनता मानव मात्र की चिन्ता है और निर्मल वर्मा की कहानियाँ इसी कटु सत्य को निर्ममता से उघाड़ती हैं। अंत में बस इतना ही कि ''ऐसे बीहड़ और अराजक समय में जबकि जीवन के सारे आयाम, सारे अनुशासन और इसलिए सहित्य भी छद्म आकांक्षाओं, कृत्रिम सरोकारों, जटिलताओं और दावपेंच से निरन्तर आक्रांत है''[19] निर्मल वर्मा की कहानियों में व्यक्त सन्नाटा और उसे व्यक्त करती चीख संभवतः हमें जटिलतर होते जा रहे जीवन को जीने की कला सिखा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. हरिगंधा (मासिक पत्रिका) प्रधान सम्पादक–राधेश्याम शर्मा, अंक–152, 10 अप्रैल, 2007, प्रकाशक–हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला (हरियाणा), पृष्ठ–10
2. ढलान से उतरते हुए, निर्मल वर्मा, प्रकाशक–भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण–2012, पृष्ठ 35
3. निर्मल वर्मा, सम्पादक–अशोक वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–1990, पृष्ठ–111
4. पल प्रतिपल (त्रैमासिकी), सम्पादक–देश निर्मोही, आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला (हरियाणा), वर्ष–15, अंक –57, जुलाई–सितम्बर–2001, पृष्ठ 162
5. वही, पृष्ठ–181
6. वही, पृष्ठ–160
7. वही, पृष्ठ–163
8. निर्मल वर्मा, सम्पादक–अशोक वायपेयी, पृष्ठ–130
9. मेरी प्रिय कहानियाँ, निर्मल वर्मा, राजपाल एंड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण–1999 पृष्ठ–भूमिका।
10. निर्मल वर्मा, सम्पादक– अशोक वाजपेयी, पृष्ठ–138
11. वही, पृष्ठ–98
12. मेरी प्रिय कहानियाँ, निर्मल वर्मा, पृष्ठ–59
13. वही, पृष्ठ–21, 22
14. वही, पृष्ठ–47
15. वही, पृष्ठ–117
16. निर्मल वर्मा, सम्पादक, अशोक वाजयपेयी, पृष्ठ–99
17. मेरी प्रिय कहानियाँ, निर्मल वर्मा, पृष्ठ–101
18. निर्मल वर्मा, सम्पादक–अशोक वाजपेयी, पृष्ठ–122
19. पल प्रतिपल (त्रैमासिकी), सम्पादक–देश निर्मोही, आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला (हरियाणा) वर्षः 20, संयुक्तांकः 74–75, दिसम्बर 2005–मार्च 2006, पृष्ठ–3